ISSN (P) : 0976-5255
(e) : 2454-339X
Impact Factor : 8.870 (SJIF)

गोकुल दास हिंदू गर्ल्स कॉलेज
मुरादाबाद

द्वारा

शोध मंथन

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Vol. - XIV Special Issue Feb.2023

मुख्य अतिथि संपादकः
प्रो० चारू महरोत्रा

अतिथि संपादकः
डॉ० शैफाली अग्रवाल

JOURNAL ANU BOOKS
Delhi • Meerut • Glasgow (U.K.)
www.anubooks.com

कस्तूरबा गाँधी : आदर्श नारी एवं सेवानिष्ठ पत्नी

बिजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
शोधार्थी, इतिहास विभाग
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर,
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर, (उ०प्र०)

डॉ० मनोज कुमार सिंह
असिसटेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर,
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर, (उ०प्र०)

सारांश

सृष्टि के चक्र को चलायमान रखने के लिए ईश्वर ने स्त्री–पुरूष को एक दूसरे के पूरक के रूप में बनाया है। पुरूष को शारीरिक बल अधिक दिया तो स्त्री को प्रेम से भरा हृदय भावुकता के साथ–साथ समर्पण की भावना रग–रग मे भरी हुई। ऐसी ही भावना ओत प्रोत थी बा अर्थात् कस्तूरबा गाँधी। महात्मा गाँधी के बापू बनने के पीछे इस महान महिला के त्याग की अहम भूमिका है। अगर ये न होती तो आज गाँधी जी 'महात्मा' न होते। पति का साथ निभाते–निभाते कस्तूरबाई सारे हिन्दुस्तानियों की बा बन गयी। कस्तूरबा गाँधी की मृत्यु को एक अरसा हो चुका है, लेकिन दुनिया को बताने के लिए कस्तूरबा होना, मोहनदास की पत्नी होना क्या था, यह अपने आप में एक दिलचस्प कहानी है।

मुख्य बिन्दु

कस्तूरबा गाँधी, पत्नी धर्म, बापू की इच्छा, आदर्श नारी, समर्पित नारी, भारत छोड़ो आन्दोलन, स्त्री शक्ति, स्त्री मुक्ति का प्रतीक।

प्राक्कथन

कद्र अब तक तेरी तारीख ने जानी ही नहीं।
तुझ में शोले भी हैं, बस अश्क फिशानी ही नहीं।
तू हकीकत भी है दिलचस्प कहानी ही नही।
तेरी हस्ती भी है एक चीज, जवानी ही नही।
अपनी तारीख का उन्वान बदलना है तुझे।
उठ मेरी जान मेरे साथ ही चलना है तुझे।

कैफी आजमी की ये पंक्तिया उस पुरानी कहावत को चरितार्थ करती है, उस तरफ इशारा करती है। जिसमे कहा जाता है कि "Bhind Evary Successful man There is a woman" हर कामयाब मर्द के पीछे एक महिला होती है लेकिन उस महिला की मेहनत, त्याग व बलिदान की कहानियों पर कभी उतनी चर्चा नहीं होती जितनी कि उस कामयाब पुरुष की चर्चा होती है क्योंकि पर्दे के पीछे काम करने वाली महिला को उस प्रेरणास्त्रोत को समाज व हम बहुत जल्द भूल जाते है। उन्ही मे से एक महान महिला है– कस्तूरबा गाँधी। गाँधी जी को महात्मा बनाने मे कस्तूरबा गाँधी का बहुत बडा हाथ था। गाँधी जी जैसे कठोर, निरकुश, अनुशासनप्रिय, हठी और असामान्य व्यक्ति के साथ कस्तूरबा ने कदम–कदम पर समझौता किया और उनकी प्रत्येक, अच्छी बुरी बात को शिरोधार्य किया। स्वय गाँधी जी ने कहा था "बा ही है, जो इतना सहन करती है। मेरे जैसे आदमी के साथ जीवन बिताना बड़ा कठिन काम है। इनके अलावा कोई और होता तो मेरा जीवन निर्वाह होना कठिन था।"

11 अप्रैल 1869 में पोरबंदर के व्यापारी ब्रजकुवर कपाड़िया के सम्पन्न परिवार में एक पुत्री का जन्म हुआ उसका नाम रखा

गया– कस्तूर बैन माकन कपाडिया। उस जमाने में लडकियो की शिक्षा पर उतना ध्यान नही दिया जाता था जितना कि आज। लडकियो की पाठशाला उनका घर ही होता था। उस पाठशाला मे किताब और तख्ती का काम नही था। उनको कई तरह से सिखाया पढाया जाता था। बचपन मे माँ कस्तूर को झाँसी की रानी की कहानी, सती अनुसूइया, सत्यवान सावित्री की कहानी, तारामती हरिश्चंद्र की कहानी सुनाती। कौन जाने कस्तूरबा के स्वभाव में निडरता, साहस, त्याग, सहिष्णुता आदि गुण वही से आये हो। कुल मिलाकर शिक्षा के नाम पर व्यावहारिक, धार्मिक और दुनियादारी वाली शिक्षा थी जिसका कस्तूरबा के मन पर गहरा प्रभाव पडा जो जीवन पर्यन्त चलता रहा।

तेरह वर्ष की उम्र मे कस्तूरबा का बापू के साथ विवाह हो गया। शुरुआती दिनों नवदम्पति में बहुत खटपट रहती थी। दोनों में कुट्टी हो जाती थी। कई दिनों तक दोनों बात नही करते थे। गाँधी जी को कस्तूरबा की निरक्षरता बहुत चुभती थी। धीरे–धीरे उन्होंने कस्तूरबा को कामचलाऊ पढने–लिखने योग्य बनाया और कस्तूरबा भी बापू के रग मे रगती चली गई। बापू सिद्धात बनाते कस्तूरबा उन पर अमल करती। गाँधी जी के अनुसार "बा का जबदस्त गुण था– सहज ही मुझमे समा जाना। मै नहीं जानता या कि यह गुण उनमें छिपा हुआ है लेकिन जैसे–जैसे मेरा सार्वजनिक जीवन उज्जवल बनता गया, वैसे–वैसे कस्तूरबा खिलती गई और पुख्ता विचारों के साथ मुझमे यानी मेरे काम मे समाती गई"।

कस्तूरबाई या कस्तूरबा उम्र मे गाँधी जी से छह महीने बडी थी। तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो उनका व्यक्तित्व गाँधी जी को चुनौती देता प्रतीत होता है। स्वय गांधी जी भी इस बात को स्वीकार करते हुए कहते है "जो लोग मेरे और बा के निकट सपर्क मे आए है, उनमे अधिक सख्या तो ऐसे लोगो की है, जो मेरी अपेक्षा बा पर अनेक गुनी अधिक श्रद्धा रखते हैं।" वैसे भी वटवृक्ष को आकार देने वाला बीज प्राय. मिट्टी तले ही छिप जाता है।"

गाँधी जी जब बैरिस्टर की पढाई के लिए लंदन जाने की तैयारी में थे और रुपये पैसे का इन्तजाम होने मे दिक्कते आ रही थी क्योंकि पिता दीवान करमचद की मृत्यु हो चुकी थी। इस वजह से भी घर की आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नही थी। माना जाता है कि स्त्रीधन पर किसी दूसरे का अधिकार नही होता लेकिन जब पत्नी के सामने उसके पति के सम्मान और भविष्य का सवाल आता है तो वह अपने अधिकार को पति पर न्योछावर कर देती है। पत्नी धर्म का पालन करते हुए कस्तूरबा ने गाँधी जी को पढने हेतु अपने गहने तक बेच दिये थे और मन को यह सात्वना दी कि गहना क्या चीज है? एक बार पति आत्मनिर्भर और बैरिस्टर बन जायेंगे तो गहना फिर से आ सकता है।

पति के लदन जाने के बाद कस्तूरबा ने आर्थिक मुसीबते झेली। मोध वैश्य समाज के द्वारा जाति बहिष्कृत हो जाने के दिनों मे संघर्ष, घर मे पति के न होने से पुत्र हरिलाल के साथ अकेलेपन की लडाई कस्तूरबा ने खुद लडी। पति के मुसीबत मे त्याग की भावना की झलक हमे कस्तूरबा गाँधी मे पहली बार दिखाई पड़ता है।

दक्षिण अफ्रीका प्रवास मे जुलू विद्रोह (1906) के दौरान गाँधी जी ने एक ऐसा निर्णय लिया जो सीधे कस्तूरबा को प्रभावित करने वाला था– "आगे जीवन में वे ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे।" चार बेटो को जन्म देने से कस्तूरबा का शरीर कमजोर हो गया था। इस बात को ध्यान मे रखते हुए कस्तूरबा से कहा– हम जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य पालन करेंगे यानी यौन जीवन का त्याग। कस्तूरबा ने पति की बात ध्यान से सुनी। एक पत्नी को पति के उचित फैसले में सहयोग की भावना का परिचय देते हुए कहा" मुझे कोई आपत्ति नही इतना बडा फैसला सिर्फ कस्तूरबा जैसी नारी ही कर सकती है। लियो टाल्सटॉय ने जब ब्रहमचारी रहने की घोषणा की थी तो उनकी पत्नी अपने आपको मारने पर उतारू हो गई थी। वह हिस्टीरिकल हो गई थी। पति के त्याग और आदेशो का साथ नहीं दे पाई थी जबकि कस्तूरबा सस्कारो की दृष्टि से दूसरी मिट्टी की बनी थी।

गाँधी दम्पत्ति जब द. अफ्रीका मे थे तो वहाँ की सरकार ने एक कानून पास किया (1913 ई) कि जिनका भी विवाह कानूनी स्वीकृत नही हुआ है उनके विवाह को वैधता नही प्रदान की जायेगी। एक दिन बा रसोई घर मे भाखरी (गेहू की मोटी और कडी रोटी) बेलने बैठी थी। गाँधी जी के फिनिक्स वाले साथी रावजीभाई मणिलाल पटेल भाखरी सेंक रहे थे। गाँधी जी सब्जी काटते हुए लगे कस्तूरबा को छेड़ने और बोले "तू तो मेरी व्याही हुई पत्नी थी लेकिन यहाँ पर इस बात को कोई नही मानेगा अब जब बा ने भोहे चढाकर पूछा आप तो रोज–रोज नई समस्याएँ खोज लाते है अब ये क्या किस्सा है? तब गाँधी जी ने बोला अंग्रेज जनरल स्मट्स ये कहता है कि," अगर हमारी शादी सरकारी अदालत के रजिस्टर मे दर्ज नही हुई तो उसे गैर कानूनी माना जायेगा इस कानून के अनुसार तू मेरी व्याही हुई पत्नी नही लेकिन रखैल स्त्री मानी जायेगी। "अब ये सुनकर कस्तूरबा का चेहरा तमतमा उठा। वे बोली कहा उसका सिर? उस निठल्ले को ऐसी बाते कहाँ से सूझती हैं? गाँधी जी ने मुस्कुराते हुए कहा जिस तरह हम पुरुष सरकार से लड रहे है उस तरह अब तुम महिलाओ को भी अपने अधिकारो के लिए लडना होगा।" आगे गाँधी जी ने कहा क्या स्त्रियो को पुरुषो के सुख दुःख में भागीदारी नही करनी चाहिए, सीता ने राम के सघर्ष मे हिस्सा लिया। तारामती ने हरिश्चद के सघर्ष मे बराबर की भागीदारी की। पति के साथ सघर्ष में बराबर की साझीदार थी। बस फिर क्या था? गाँधी जी की बात मान कर तैयार हो गई और इस आंदोलन में महिलाओं के मोर्चे का नेतृत्व देने के लिए और गई भी इस मसले पर जेल। सभवतः ससार की पहली महिला जो महिलाओं के सम्मान के लिए अपनी मर्जी से जेल गई। बाद में कस्तूरबा किसी काम से बाहर गई तो गाँधी जी ने रावजीभाई से कहा "बा की खूबी यही है कि वह मन से या बेमन से मेरी इच्छा का अनुसरण करती है।"

Shodh Manthan Vol XIV Special Issue Feb 2023 ISSN (P)0258-1701(e)2454-3403 Impact Factor 8.870
Doi: https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.v14.iS.01

गाँधी जी पत्नी कस्तूरबा के साथ जनवरी 1915 में भारत लौटे जनता ने बड़ी गर्मजोशी से उनका स्वागत किया। दक्षिण अफ्रीका में उनके संघर्षों और उनकी सफलताओं ने उन्हें भारत में बहुत लोकप्रिय बना दिया था। 1917 में किसानों के दुर्दशा के समाधान हेतु चंपारन गये चंपारन आने के कुछ ही महीनों के बाद महात्मा गाँधी को लगा कि देश के लोगों के लिए शिक्षा जरूरी है यह बात महिलाओं को समझानी होगी क्योंकि महिलाएँ ही बच्चों को संभालती है। महिलाओं तक पहुँचने के लिए किसी महिला को माध्यम बनाना होगा। उसके लिए मन, स्वभाव और अनुभव की दृष्टि से उन्हें कस्तूरबा ही सबसे उपयुक्त लगी। गाँधी जी ने कलकत्ता से उन्हें बुलवा लिया। कस्तूरबा एक समर्पित पत्नी की तरह जुट गई जिले की स्वास्थ्य और सामाजिक समस्याओं को सुधारने। स्थानीय महिलाओं की टोलियाँ बनाकर गाँव की सफाई कराती, झाड़ू बनाना सिखाया जाता था। धीरे-धीरे अन्य महिलाएं उनके साथ मिलकर गाव में परिवर्तन लाने का काम किया। वास्तव में कस्तूरबा महिला सशक्तीकरण की रोल मॉडल थी।

कस्तूरबा से एक बार पूछा गया कि बापू के सत्य के साथ मेरे प्रयोग में आप कहाँ है? बा ने हँसकर जवाब देते हुए कहा- चूंकि मैं अनपढ़ हूँ पढ़ नहीं सकती हूँ किंतु मैं यह जानती हूँ कि उन्होंने अनपढ़ होने का दायित्व दोनों के बीच बाँटा है। मैं सजाकर रखी गई एक मूर्ति की तरह उसमें शामिल हूँ। बापू ने उसमें मेरी सुन्दरता का बखान भी किया है और उपभोग का भी। बापू ने सत्य के साथ जो प्रयोग किए है, उन्हें मैंने भोगा है। अर्थात् गाँधी के जीवन में सुख-दुःख में बराबर की साझेदार थी। पति का साथ निभाते-निभाते कस्तूरबाई सारे हिंदुस्तान की बा बन गई।

1937 के दिसम्बर में गाँधी जी कलकत्ता में बीमार हो गए थे। वहाँ से वे सेवाग्राम आश्रम में आए। आश्रम में कस्तूरबा ने तन-मन से उनकी सेवा ठीक होने के कुछ दिन बाद बापू ने कहा- "मुझे जिस चीज की जरूरत होती है कस्तूरबा से ले लेता हूँ। मुझे भले ही दुःख हो पर बा को कभी शिकायत नहीं होती, भले ही उस पर बड़ी से बड़ी जिम्मेदारी लाद दूँ, चाहे कुछ भी करने को कहूँ बा ने प्रसन्न मन से मेरी बात को माना है"। बापू ने हँसकर कस्तूरबा से कहा होना भी यही चाहिए न? अगर मियाँ एक बात कहे और बीबी दूसरी तो दोनों का जीवन खट्टा हो जाए, लेकिन हमारे मामले में तो मियाँ ने जो कुछ कहा उसे बीबी ने हमेशा माना ही है।" यह प्रसंग हमें कस्तूरबा गाँधी के अनुकरणीय नारी होने की ओर इंगित करता है।

बापू की इच्छा ही कस्तूरबा की इच्छा होती थी। गाँधी जी जो कहते कस्तूरबा पत्नी होने के नाते निश्चय उसका पालन करती? बात उस समय की है, जब भारत छोड़ो आंदोलन चल रहा था। सर्वत्र हड़ताल, जुलूस, धरना-प्रदर्शन इत्यादि होने की आशंका में 9 अगस्त 1942 तड़के गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधी जी ने कस्तूरबा की ओर देखकर कहा तू न रह सके तो चल लेकिन मैं तो यही कहता हूँ कि मेरे साथ चलने की अपेक्षा तू बाहर रहकर मेरा काम कर। इतना कहना कस्तूरबा के लिए बहुत था उन्होंने बिना किसी विवाद के बापू का काम, देशहित का काम करने का निश्चय किया। लुई फिशर भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान रिपोर्टिंग कर रहे थे, इस दौरान वो कस्तूरबा गाँधी से रात्रि के खाने के अवसर पर पहली बार मिले थे उन्होंने लिखा है "उनके जितना सुंदर समर्पित और दयालु चेहरा मैं सोचता हूँ, पहली बार देखा था। सहजता और सहिष्णुता उनकी झुर्रियों में झिलमिला रही थी।" गाँधी जी की गिरफ्तारी के बाद पत्नी धर्म का पालन करते हुए शिवाजी पार्क (बम्बई) में भरी जनसभा को संबोधित किया और बाद में गिरफ्तार होकर पूना के आगा खाँ महल में जेल भी गई।

गाँधी जी जब-जब धरना प्रदर्शन, आमरण अनशन, भूख हड़ताल उपवास आदि करते थे तो कस्तूरबा की भागीदारी कुछ ज्यादा ही बढ़ जाती थी। 1942 के जेल वास के समय कस्तूरबा का शरीर बहुत कमजोर हो गई थी लेकिन बापू के आँगा खाँ महल में उपवास शुरू करते ही उनमें नई चेतन, नयी शक्ति आ गई। जर्जर शरीर होने पर भी लगभग 21 दिनों तक खड़े पैर सती अनुसूइया की तरह बापू की सेवा की। कस्तूरबा गाँधी समर्पण भावना के साथ बापू के खान-पान के बारे में बहुत अधिक सावधानी रखती थी। इतना ही नहीं ठीक समय पर बापू को खाना खिलाना, फल, मेवा आदि की व्यवस्था करना, कभी-कभी समय मिलने पर उनकी मनपसंद व्यंजन भी बड़े चाव से बनाती। बापू के लिए जरूरी चीजें बहुत सफाई से तैयार करना या कराना, उनके खाने-पीने के बर्तन स्वच्छ रखना समय मिलता तो शाम को उनके शरीर की मालिश खुद करती। सिर पर तेल रखती, उनके खादी के वस्त्रों आदि कपड़ों की सफाई स्वयं करती। जीवन में कभी भी असावधानी नहीं होने दी जिंदगी के अंतिम पड़ाव तक पूरे समर्पण के साथ बापू की सेवा में लगी रहती थी। अपने मृत्यु से कुछ ही घंटे पहले कस्तूरबा ने मनु गाँधी से कहा "मनु बापू जी की बोतल का गुड़ खत्म हो गया है तूने दूसरा तैयार किया? मनु ने जवाब दिया, हाँ, अभी तैयार हो जाता है।" उस समय कस्तूरबा ने कहा देख मेरे पास तो कई लोग बैठे है। तू जा बापू जी को दूध और गुड़ देकर तू भी भोजन कर ले। "अब ये सब काम तो उस समय की सभी समर्पित स्त्रियों जरूरी जरूर करती होगी लेकिन जिस तरह से कस्तूरबा ने स्वाधीनता संग्राम में और अलग-अलग आंदोलनों में आगे बढ़कर बापू के साथ हिस्सा लिया, उनकी भी हिम्मत बढ़ाई ये सब काम करना बड़ा मुश्किल है बड़ा दुष्कर है।"

कस्तूरबा गाँधी त्रिभुज के तीनों बिंदुओं को केंद्र में रखकर साध रही थी एक पति के प्रति अपना पत्नी धर्म और दूसरी ओर परिवार के प्रति जिम्मेदारी तथा तीसरा समाज के प्रति सेवा धर्म निबाह रही थी। जैसा कि उनकी पोती तारा गाँधी भट्टाचार्य ने एक साक्षात्कार में कस्तूरबा गाँधी के पति प्रेम और परिवार को कैसे जोड़ कर रखती थी, इस बात का जो जिक्र किया है वह संक्षेप में इस प्रकार है" बा के बिना बापू का कोई अस्तित्व ही नहीं था बल्कि यह कहूँ कि बापू बा के बिना राष्ट्रपिता नहीं बन पाते। बा भी बापू के बिना नहीं रह सकती। अक्सर जब हम भाई-बहनों में से कोई बीमार हो जाता था तब बा हमारा पूरा ध्यान रखती हमारे

साथ रहती और हमारे स्वस्थ होते ही बापू के पास चली जाती। दरअसल उनके मन में पति सेवा का जो भाव था वह प्रेम से और भी प्रबल हो गया था।"

सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता रिचर्ड एटनबरो ने गाँधी पर फिल्म बनाई कस्तूरबा गाँधी पर्दे पर एक बार फिर सजी। उन्होने उनके बारे में लिखा है। "बा एक असाधारण स्त्री के रूप में प्रसिद्ध है। वे त्याग, साहस और अविश्वसनीय रूप से गाँधी जी की सबसे अधिक समर्पित शिष्या होने के साथ-साथ वे उनकी देखभाल करती थी और बहुत प्रभावी आलोचक थी।"

कस्तूरबा गाँधी का त्याग और बलिदान किसी भी वीरांगना से कम नही था, किसी भी बडे स्वतंत्रता सेनानी के साथ उनका मुकाबला हो सकता है और जब ये मुकाबला और तुलना होगी कस्तूरबा किसी से उन्नीस नजर नही आयेगी इक्कीस भले ही दिख जाये। उन्होने लक्ष्मीबाई की तरह कभी तलवार नही चलाई लेकिन पति के साथ पूरा जीवन राष्ट्रसेवा में खपा दिया। महात्मा गाँधी की धर्मपत्नी से अलग आजादी के दौरान महिलाओ की रोल मॉडल साबित हुई। उनके अंदर कूट-कूट कर भरा था त्याग और वात्सल्य का भाव जिससे बापू तक इतने प्रभावित थे कि वो कस्तूरबा को बा कह कर ही पुकारते थे। एक आदर्शनारी, अनुकरणीय पत्नी त्याग, बलिदान, सहृदयी, समर्पित पत्नी और प्रेरणादायी माँ के साथ-साथ एक जबरदस्त तेजस्वी स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक भी थी। कस्तूरबा गाँधी स्त्री शक्ति और स्त्री मुक्ति का प्रतीक है।

संदर्भ

1. विपिन, चंद्र., मुखर्जी, मृदुला महाजन सुचेता. (2009). 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष'. हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय: दिल्ली. वि०, 29वाँ संस्करण।
2. गाँधी, करमचंद. (2010). 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा'. नवजीवन प्रकाशन मंदिर: अहमदाबाद।
3. कलार्थी, मुकुलभाई. (2018). 'बा और बापू'. नवजीवन मुद्रणालय: अहमदाबाद।
4. मोहन, अरविंद. (2018). 'बा- बापू'. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास: नई दिल्ली।
5. किशोर, गिरिराज. (2018). 'बा'. राजकमल प्रकाशन: नई दिल्ली।
6. (2015). आजकल, अक्टूबर।
7. (2022). आजकल, अक्टूबर।
8. दैनिक जागरण 22 फरवरी 2021।

SOCIAL SCIENCES	SINCE	ISSN (P)	ISSN (E)	PERIOD	IMPACT FACTOR
Research Journal of Philosophy & Social Sciences	1974	0048-7325	2454-7026	Half Yearly June-Dec.	8.902
Review Journal of Philosophy & Social Sciences	1975	0258-1707	2454-3403	Half Yearly Mar-Sept.	8.862
Review Journal of Political Philosophy	2003	0976-3635	2454-3411	Half Yearly Mar-Sept.	8.858
Journal Global Values	2010	0976-9447	2454-8291	Half Yearly June-Dec.	8.835

Arts & Humanities	SINCE	ISSN (P)	ISSN (E)	PERIOD	IMPACT FACTOR
Notions: A Journal of English Literature	2010	0976-5247	2395-7239	Half Yearly June-Dec.	8.874
Artistic Narration: A Journal of Performing Art	2010	0976-7444	2395-7247	Half Yearly June-Dec.	8.898

Science	SINCE	ISSN (P)	ISSN (E)	PERIOD	IMPACT FACTOR
Voyager: A Journal of Sciences	2010	0976-7436	2455-054X	Yearly	8.419

Multidisciplinary	SINCE	ISSN (P)	ISSN (E)	PERIOD	IMPACT FACTOR
Shodhmanthan (शोधमंथन) in Hindi	2010	0976-5255	2452-339X	Quarterly Mar-Sept.	8.870

- All Journals are available in Print and online (Open Access)
- Plagiarism: Check for similarity to prior published works through Ithenticate (Turnitin)
- Double blind peer reviewed.

Crossref | doi | International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) | OPEN ACCESS | Scientific Journal Impact Factor

Published By :
Journal Anu Books
In Support of KIET
Shivaji Road, Near Petrol Pump, Meerut, UP (india)
E-mail : kietjournals@gmail.com
journalanubooks@gmail.com
Website : www.anubooks.com, www.kiet.asia
Phone : 0121-4007472
Mob. : 91-9997847837, 8279743450

₹ 1000/-